चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	19.07.2020	02	01-02

एचएयू के कुलपति व कृषि मंत्री के बीच कृषि मुद्दों को लेकर हुई मंत्रणा

हिसार | चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह व कृषि मंत्री जेपी दलाल के बीच शनिवार को कृषि संबंधी विभिन्न मुद्दों को लेकर मंत्रणा हुई। कुलपति व कृषि मंत्री की यह मंत्रणा महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय उचानी (करनाल) में हुई। इस दौरान कुलपति ने कृषि मंत्री जेपी दलाल को विश्वविद्यालय में कोविड-19 के मद्देनजर राज्य व केंद्र सरकार के सभी दिशा-निर्देशों को ध्यान में रखते हुए चल रही गतिविधियों से अवगत कराया। कुलपति ने कृषि मंत्री को बताया कि विश्वविद्यालय में कोविड-19 के चलते विभिन्न विभागों द्वारा ऑनलाइन वेबिनार आयोजित/सेमीनार/प्रशिक्षण कार्यक्रम जारी हैं। उन्होंने बताया कि स्नातकोत्तर विद्यार्थियों की थीसिस सेमीनार, मूल्यांकन और वाइवा का कार्य भी सफलतापूर्वक चल रहा है। इसके अलावा विश्वविद्यालय में कोविड-19 की हिदायतों के अनुसार चल रही गतिविधियों को लेकर भी चर्चा की। कुलपति ने कृषि मंत्री जेपी दलाल के साथ प्रदेश के टिड्डी प्रभावित क्षेत्रों को लेकर चर्चा की व बताया कि विश्वविद्यालय का कीट विज्ञान विभाग इस बारे में किसानों को समय-समय पर जागरूक कर रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	19.07.2020	12	03-08

हकृवि कुलपति ने वर्षा पर निर्भर किसानों से की सामयिक प्रबंधन की अपील

शुष्क क्षेत्र में भी किसान ले सकते हैं उचित उत्पादन : वीसी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

प्रदेश में सिंचाई के साधनों के बढ़ने के बावजूद कुल खेती योग्य भूमि का लगभग 20 प्रतिशत भाग शुष्क खेती के अंतर्गत आता है, जो कि मुख्यतः वर्षा पर आधारित है। इसलिए विषम परिस्थितियों में शुष्क क्षेत्रों के लिए खरीफ फसल की पैदावार बढ़ाने के लिए सामयिक प्रबंधन अति आवश्यक है। इसे अपनाकर किसान निश्चित रूप से अपनी फसल की पैदावार बढ़ा सकते हैं। उक्त सलाह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने किसानों को दी। उन्होंने कहा कि बाजरा खरीफ मौसम की प्रमुख फसल होने के साथ ही शुष्क क्षेत्रों में इसके उत्पादन का भी महत्वपूर्ण योगदान है। प्रदेश में कुल वर्षा अधिकतर दो महीनों के अन्दर ही मध्य जुलाई से मध्य सितम्बर तक हो जाती है। यदि हम पिछले 10 वर्षों के अंतर्गत वर्षा की मात्रा, मानसून के आगमन व वापसी को देखें तो कई बार तो बारिश सामान्य से भी कम हुई है और कई बार सूखे की स्थिति का भी सामना करना पड़ा है। विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा ने बताया कि शुष्क क्षेत्रों में किसानों को मुख्यतः वर्षा की कमी, वर्षा के समुचित वितरण का अभाव, मानसून की जल्दी वापसी व लंबे समय तक वर्षा का न होना आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन क्षेत्रों में औसत 300-500 मि.मी. वर्षा प्रतिवर्ष होती है परंतु उपर्युक्त असामान्य परिस्थितियों के कारण यह फसलों की जरूरत को पूरा करने में असमर्थ हो जाती है तथा किसान को फसल का भरपूर लाभ नहीं मिल पाता। इसलिए सामयिक प्रबंधन आवश्यक है।

प्रो. समर सिंह, कुलपति।

मानसून का देर से आना

इस दौरान बाजरे की एचएचबी 67 संशोधित प्रजाति की किस्म का प्रयोग कर सकते है, क्योंकि यह कम अवधि की किस्म होने के कारण पछेती बोने पर भी अच्छी पैदावार देती है। बाजरे की बिजाई जुलाई के अन्तिम सप्ताह तक कर सकते हैं। बाजरे की तीन सप्ताह पुरानी नर्सरी के पौधों को जुलाई के अंत से अगस्त के दूसरे सप्ताह तक रोपाई कर सकते है। इसके अलावा मूंग, लोबिया एवं ग्वार की अगस्त के प्रथम सप्ताह तक बिजाई कर सकते है।

बिजाई के समय लगातार वर्षा होना

अगर बिजाई के समय लगातार बारिश हो तो सूखे खेतों में रौजर-सीडर द्वारा डोली व नाली विधि से बिजाई करनी चाहिए। मानसून की वर्षा होने से पहले बाजरे की पौध तैयार रखनी चाहिए ताकि वर्षा के तुरंत बाद पौध लगाई जा सके।

पैदावार बढ़ाने के लिए खास सुझाव

विश्वविद्यालय के सहायक निदेशक (विस्तार शिक्षा) डॉ. सूबे सिंह व सस्य विज्ञानी डॉ. सुरेंद्र कुमार शर्मा ने किसानों को सामयिक प्रबंधन के लिए सुझाव देते हुए कहा कि किसान अपनी भूमि को अच्छी तरह जोतकर तैयार रखें व खेत की मेढ़ बंधी भी करें। सप्ताह में लगातार 25-30 मि.मी. वर्षा (कम से कम एक वर्षा 15-20 मि.मी.) होने पर फसल की बुवाई करें। मानसून शुरू होने के बाद फसलों की बिजाई जल्द-से-जल्द करें। खेती योग्य भूमि के 60 प्रतिशत हिस्से में खरीफ फसलों को बोना चाहिए व बाकी 40 प्रतिशत हिस्सा रबी फसलों के लिए छोड़ा चाहिए। उन्होंने किसानों को सुझाव दिया कि ऐसे क्षेत्र जहां जमीन पर पपड़ी की समस्या न हो, बाजरे की बिजाई दो पोरा बारानी हल से करनी चाहिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	19.07.2020	03	03

हकृवि कुलपति व कृषि मंत्री की कृषि मुद्दों को लेकर हुई मंत्रणा

हिसार, 18 जुलाई (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफैसर समर सिंह व कृषि मंत्री जे.पी. दलाल की शनिवार को कृषि संबंधी विभिन्न मुद्दों को लेकर मंत्रणा हुई।

कुलपति व कृषि मंत्री की यह मंत्रणा महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय उचानी (करनाल) में हुई। इस दौरान कुलपति ने कृषि मंत्री दलाल को विश्वविद्यालय में कोविड-19 के मद्देनजर राज्य व केंद्र सरकार के सभी दिशा-निर्देशों को ध्यान में रखते हुए चल रही गतिविधियों से अवगत कराया। कुलपति ने कृषि मंत्री को बताया कि विश्वविद्यालय में कोविड-19 के चलते विभिन्न विभागों द्वारा ऑनलाइन वैबिनार आयोजित/ सैमीनार/ प्रशिक्षण कार्यक्रम जारी हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	20.07.2020	01	07-08

अभी और भी बारिश होने का अनुमान : मौसम विभाग

हिसार (ब्यूरो): हिसार व आसपास के एरिया में मानसून एक बार सक्रिय होने पर मैदानी क्षेत्रों में 49.2 मिलीमीटर बारिश हुई। हालांकि शहरी क्षेत्र में कम बारिश हुई। शहरी क्षेत्र में 37 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई। इससे निचले क्षेत्र कई घंटों तक जलमग्न रहे। मौसम विभाग की मानें तो 2-3 दिन मौसम में बदलाव रहेगा। हिसार की बात करें रविवार तड़के तेज बारिश हुई, जो सुबह 8 बजे तक रुक-रुक कर होती रही। इससे शहर के निचले क्षेत्रों में जलभराव रहा। बीते कई दिनों से हो रहा बारिश का इंतजार रविवार अलसुबह खत्म हुआ। अलसुबह ही काली घटा छा गई और झमाझम बारिश हुई। हिसार में 37 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई। कृषि क्षेत्र यानि मैदानी क्षेत्र में तेज बारिश हुई। वहां पर बारिश का आंकड़ा 49.2 मिलीमीटर दर्ज किया गया। रविवार को हुई बारिश से मौसम खुशनुमा हो गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि मौसम विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डा. मदन खिचड़ ने बताया कि हरियाणा राज्य में 21 जुलाई तक मौसम परिवर्तनशील तथा बीच बीच में आंशिक बादलवाई रहेगी। मौसम विभाग के अनुसार मॉनसूनी टर्फ मैदानी क्षेत्रों की तरफ आने से अब मॉनसून सक्रिय हो रहा है जिससे अरब सागर से आने वाली नमी वाली हवाएं हरियाणा की तरफ बढ़ने से हल्की से मध्यम बारिश दर्ज हुई है।

अरब सागर से आने वाली मॉनसून हवाओं के कारण 20 व 21 जुलाई को भी बारिश होने की संभावना है। मौसम विभाग के अनुसार मॉनसून की सक्रियता 22 जुलाई तक बने रहने की संभावना है। इस दौरान राज्य में तापमान सामान्य से कम या आसपास बने रहने परन्तु हवा में नमी अधिक रहने की संभावना है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	19.07.2020	02	03-04

एचएयू के कुलपति औरे कृषि मंत्री की कृषि मुद्दों को लेकर हुई मंत्रणा

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह व कृषि मंत्री जेपी दलाल की शनिवार को बागवानी विश्वविद्यालय उचानी में कृषि संबंधी विभिन्न मुद्दों को लेकर मंत्रणा हुई। कुलपति ने कृषि मंत्री को विश्वविद्यालय में कोविड-19 के मद्देनजर राज्य व केंद्र सरकार के सभी दिशा-निर्देशों को ध्यान में रखते हुए चल रहीं गतिविधियों से अवगत कराया।

एचएयू के कुलपति प्रो. समर सिंह व कृषि मंत्री जेपी दलाल बागवानी विश्वविद्यालय उचानी में।

उन्होंने कृषि मंत्री को बताया कि विश्वविद्यालय में कोविड-19 के चलते विभिन्न विभागों द्वारा ऑनलाइन वेबिनार व प्रशिक्षण कार्यक्रम जारी हैं। स्नातकोत्तर विद्यार्थियों की थीसिस, सेमिनार, मूल्यांकन और वाइवा का कार्य भी सफलतापूर्वक चल रहा है। प्रो. समर सिंह ने कृषि मंत्री के साथ प्रदेश के टिड्डी प्रभावित क्षेत्रों को लेकर चर्चा की और बताया कि विवि का कीट विज्ञान विभाग इस बारे में किसानों को समय-समय पर जागरूक कर रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	20.07.2020	04	07-08

कृषि विशेषज्ञ की सलाह

डॉ. एसके सहरावत

वर्षा ऋतु में बैंगन की फसल के लिए किसान खेत करें तैयार

बैंगन की पिछली फसल के कच्चे फलों को तोड़कर बाजार में बेचने के लिए भेज दें। फलों को तोड़ने के लिए किसी चाकू या तेजधार वाले औजार का प्रयोग करें, जिससे कि तोड़ते समय पौधों को क्षति न हो। आवश्यकता होने पर सिंचाई करें। फल व तना छेदक कीड़े के लगने पर ग्रसित फलों का तोड़कर नष्ट कर दें और इसके बाद 75 ग्राम स्पाइनोसेड को प्रति एकड़ 80 लीटर पानी में घोलकर 15 दिन के अंतर पर तीन बार छिड़काव करें। दवा का प्रयोग करने के बाद फलों को 8 -10 दिन तक खाने के काम में न लाएं। वर्षा ऋतु की फसल के लिए खेत की तैयारी करें। इसकी उन्नत किस्तों बीआर -112, हिसार श्यामल व हिसार प्रगति को प्रयोग में लाएं।

डॉ. एसके सहरावत
हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

नर्सरी में पौध इस महीने तक तैयार हो जाएगी। खेत को तैयार कर क्यारियों में बांट लें। एक एकड़ खेत में लगभग 10 टन गोबर की खाद बिखेर दें और जुताई कर दें। पौधरोपण से पहले 40 किलोग्राम नाइट्रोजन, 20 किलोग्राम फास्फोरस और 10 किलोग्राम पोटाश प्रति एकड़ दें। कतारों का फासला लंबी किस्मों में 60 सेंटीमीटर और गोल किस्मों में 75 सेंटीमीटर रखें। पौधे से पौधे की दूरी 60 सेंटीमीटर रखें। पौधरोपण के बाद सिंचाई अवश्य करें। विषाणु रोग से बचाव के लिए शुरू से ही कीटनाशक दवाएं प्रयोग में लें। हरा तेला, सफेद मक्खी, गोभ व फल छेदक कीड़े आदि बैंगन की फसल को नुकसान पहुंचाते हैं। रस चूसने वाले कीटों के नियंत्रण के लिए 300 - 400 मिलीलीटर मैलाथियान 50 ईसी को 200 - 250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ फसल पर छिड़के। फल लगने शुरू होते ही बारी-बारी से सिन्थेटिक पाइरेथ्राएड 20 ईसी या 200 मिलीलीटर डेल्टामैथ्रीन 2.8 ईसी को 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़के ताकि फल छेदक का नियंत्रण भी हो जाए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	18.07.2020	--	--

हकृवि कुलपति ने वर्षा पर निर्भर क्षेत्रों के किसानों से की खरीफ फसलों के लिए सामयिक प्रबंधन की अपील

सामयिक प्रबंधन से शुष्क क्षेत्र में भी किसान ले सकते हैं उचित उत्पादन : प्रो. समर सिंह

पांच बजे न्यूज

हिसार। प्रदेश में सिंचाई के साधनों के बढ़ने के बावजूद कुल खेती योग्य भूमि का लगभग 20 प्रतिशत भाग शुष्क खेती के अंतर्गत आता है, जो कि मुख्यतः वर्षा पर आधारित है। इसलिए विषम परिस्थितियों में शुष्क क्षेत्रों के लिए खरीफ फसल की पैदावार बढ़ाने के लिए सामयिक प्रबंधन अति आवश्यक है। इसे अपनाकर किसान निश्चित रूप से अपनी फसल की पैदावार बढ़ा सकते हैं। उक्त सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफसर समर सिंह ने किसानों को दी। उन्होंने कहा कि बाजरा खरीफ मौसम की प्रमुख फसल होने के साथ ही शुष्क क्षेत्रों में इसके उत्पादन का भी महत्वपूर्ण योगदान है। प्रदेश में कुल वर्षा अधिकतर दो महीनों के अन्दर ही मध्य जुलाई से मध्य सितम्बर तक हो जाती है। यदि हम पिछले 10 वर्षों के अंतर्गत वर्षा की मात्रा, मानसून के आगमन व वापसी को देखें तो कई बार तो बारिश सामान्य से भी कम हुई है और कई बार सूखे की स्थिति का भी सामना करना पड़ा है।

ये हैं शुष्क क्षेत्रों की मुख्य समस्याएं

हकृवि के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आरएस हुडा ने बताया कि शुष्क क्षेत्रों में किसानों को मुख्यतः वर्षा की कमी, वर्षा के समुचित वितरण का अभाव, मानसून की जल्दी वापसी व लंबे समय तक वर्षा का न होना आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन क्षेत्रों में औसत 300-500 मि.मी. वर्षा प्रतिवर्ष होती है परंतु उपर्युक्त असामान्य परिस्थितियों के कारण यह फसलों की ज़रूरत को पूरा करने में असमर्थ हो जाती है तथा किसान को फसल का भरपूर लाभ नहीं मिल पाता। इसलिए इन्हीं परिस्थितयों को ध्यान में रखकर ही किसानों के लिए सामयिक प्रबंधन अति आवश्यक है।

ऐसे करें सामयिक प्रबंधन

हकृवि के सस्य विज्ञान विभाग के कृषि वैज्ञानिक डॉ. सुरेंद्र कुमार शर्मा ने बताया कि सामयिक प्रबंधन के लिए किसान कुछ विशेष ध्यान रखकर अपनी फसल की पैदावार बढ़ा सकते हैं। उन्होंने सामयिक प्रबंधन के लिए निम्नलिखित कारण बताए हैं जो इस प्रकार हैं :-

मानसून का देर से आना : इस दौरान बाजरे की एचएचबी 67 संशोधित प्रजाति की किस्म का प्रयोग कर सकते हैं क्योंकि यह कम अवधि की किस्म होने के कारण पछेती बोने पर भी अच्छी पैदावार देती है। बाजरे की बिजाई जुलाई के अन्तिम सप्ताह तक कर सकते हैं। बाजरे की तीन सप्ताह पुरानी नर्सरी के पौधों को जुलाई के अंत से अगस्त के दूसरे सप्ताह तक रोपाई कर सकते हैं। इसके अलावा मूंग, लोबिया एवं ग्वार की अगस्त के प्रथम सप्ताह तक बिजाई कर सकते हैं।

फसल का प्रारंभिक दशा के दौरान सूखाग्रस्त होना : अगर फसल प्रारंम्भिक दशा में सूखे की चपेट में आ जाती है तो दोबारा वर्षा होने पर खाली स्थानों पर बाजरे की पौध की रोपाई कर सकते हैं। साथ ही पहिए वाला कसौला द्वारा भूमि पलवार कर सकते हैं।

बिजाई के समय लगातार वर्षा का होना : अगर बिजाई के समय लगातार बारिश हो तो सूखे खेतों में रीजर-सीडर द्वारा डोली व नाली विधि से बिजाई करनी चाहिए। मानसून की वर्षा होने से पहले बाजरे की पौध तैयार रखनी चाहिए ताकि वर्षा के तुरंत बाद बाजरे की पौध की रोपाई की जा सके।

मानसून की जल्दी वापसी: अगर मानसून की जल्द वापसी हो तो बाजरे की प्रत्येक तीसरी लाइन को काटकर चारे में प्रयोग कर सकते हैं। इसके अलावा फसल की निराई-गोड़ाई करने के पश्चात् सरसों की तूड़ी 4 टन प्रति हेक्टेयर के हिसाब से पलवार कर सकते हैं। इसके अलावा यदि संभव हो तो वर्षा के अपवाह को रोककर जमा किए गए वर्षा के पानी से फसलों की संवेदनशील अवस्था में सिंचाई की जा सकती है।

पैदावार बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा किसानों के लिए खास सुझाव

हकृवि के सहायक निदेशक (विस्तार शिक्षा) डॉ. सूबे सिंह व सस्य विज्ञानी डॉ. सुरेंद्र कुमार शर्मा ने किसानों को सामयिक प्रबंधन के लिए सुझाव देते हुए कहा कि किसान अपनी भूमि को अच्छी तरह जोतकर तैयार रखें व खेत की मेढ़ बंधी भी करें। सप्ताह में लगभग 25-30 मि.मी. वर्षा (कम से कम एक वर्षा 15-20 मि.मी.) होने पर फसल की बुवाई करें। मानसून शुरू होने के बाद फसलों की बिजाई जल्द-से-जल्द करें। खेती योग्य भूमि के 60 प्रतिशत हिस्से में खरीफ फसलों को बोना चाहिए व बाकी 40 प्रतिशत् हिस्सा रबी फसलों के लिए छोड़ना चाहिए। उन्होंने किसानों को सुझाव दिया कि ऐसे क्षेत्र जहां जमीन पर पपड़ी की समस्या न हो, बाजरे की बिजाई दो पोरा बारानी हल से करनी चाहिए। जमीन पर पपड़ी बनने वाले क्षेत्रों में देसी खाद की मात्रा 4 टन प्रति हेक्टेयर के हिसाब से प्रयोग करनी चाहिए। खरीफ फसलों वाले क्षेत्र के आधे भाग में बाजरा, एक चौथाई में ग्वार व बाकी एक चौथाई में दाल वाली फसलों की बिजाई की जानी चाहिए। उन्होंने किसानों से आह्वान् किया कि जहां तक संभव हो किसान डोली व नाली विधि द्वारा बिजाई करके पानी का संग्रहण करें। फसलों की विकसित किस्मों के प्रमाणित बीज का ही प्रयोग करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	18.07.2020	--	--

सामयिक प्रबंधन से शुष्क क्षेत्र में भी लें उत्पादन: कुलपति

हिसार/18 जुलाई/रिपोर्टर

प्रदेश में सिंचाई के साधनों के बढ़ने के बावजूद कुल खेती योग्य भूमि का लगभग 20 प्रतिशत भाग शुष्क खेती के अंतर्गत आता है, जो कि मुख्यत: वर्षा पर आधारित है। इसलिए विषम परिस्थितियों में शुष्क क्षेत्रों के लिए खरीफ फसल की पैदावार बढ़ाने के लिए सामयिक प्रबंधन अति आवश्यक है। इसे अपनाकर किसान निश्चित रूप से अपनी फसल की पैदावार बढ़ा सकते हैं। उक्त सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफसर समर सिंह ने किसानों को दी। उन्होंने कहा कि बाजरा खरीफ मौसम की प्रमुख फसल होने के साथ ही शुष्क क्षेत्रों में इसके उत्पादन का भी महत्वपूर्ण योगदान है। प्रदेश में कुल वर्षा अधिकतर दो महीनों के अन्दर ही मध्य जुलाई से मध्य सितम्बर तक हो जाती है। यदि हम पिछले 10 वर्षों के अंतर्गत वर्षा की मात्रा, मानसून के आगमन व वापसी को देखें तो कई बार तो बारिश सामान्य से भी कम हुई है और कई बार सूखे की स्थिति का भी सामना करना पड़ा है। विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आरएस हुडा ने बताया कि शुष्क क्षेत्रों में किसानों को मुख्यत: वर्षा की कमी, वर्षा के समुचित वितरण का अभाव, मानसून की जल्दी वापसी व लंबे समय तक वर्षा का न होना आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन क्षेत्रों में औसत 300-500 मि.मी. वर्षा प्रतिवर्ष होती है परंतु उपर्युक्त असामान्य परिस्थितियों के कारण यह फसलों की ज़रूरत को पूरा करने में असमर्थ हो जाती है तथा किसान को फसल का भरपूर लाभ नहीं मिल पाता। इसलिए इन्हीं परिस्थितयों को ध्यान में रखकर ही किसानों के लिए सामयिक प्रबंधन अति आवश्यक है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग के कृषि वैज्ञानिक डॉ. सुरेंद्र कुमार शर्मा ने बताया कि सामयिक प्रबंधन के लिए किसान कुछ विशेष ध्यान रखकर अपनी फसल की पैदावार बढ़ा सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नित्य शक्ति टाईम्स	18.07.2020	--	--

सामयिक प्रबंधन से शुष्क क्षेत्र में भी किसान ले सकते हैं उचित उत्पादन : प्रो. समर सिंह

हकृवि के कुलपति ने बारिश पर निर्भर क्षेत्रों के किसानों से की खरीफ फसलों के लिए सामयिक प्रबंधन का आह्वान

नित्य शक्ति टाइम्स न्यूज

प्रदेश में सिंचाई के साधनों के बढने के बावजूद कुल खेती योग्य भूमि का लगभग 20 प्रतिशत भाग शुष्क खेती के अंतर्गत आता है, जो कि मुख्यतः वर्षा पर आधारित है। इसलिए विषम परिस्थितियों में शुष्क क्षेत्रों के लिए खरीफ फसल की पैदावार बढ़ाने के लिए सामयिक प्रबंधन अति आवश्यक है। इसे अपनाकर किसान निश्चित रूप से अपनी फसल की पैदावार बढ़ा सकते हैं। उक्त सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफसर समर सिंह ने किसानों को दी। उन्होंने कहा कि बाजरा खरीफ मौसम की प्रमुख फसल होने के साथ ही शुष्क क्षेत्रों में इसके उत्पादन का भी महत्वपूर्ण योगदान है। प्रदेश में कुल वर्षा अधिकतर दो महीनों के अन्दर ही मध्य जुलाई से मध्य सितम्बर तक हो जाती है। यदि हम पिछले 10 वर्षों के अंतर्गत वर्षा की मात्रा, मानसून के आगमन व वापसी को देखें तो कई बार तो बारिश सामान्य से भी कम हुई है और कई बार सूखे की स्थिति का भी सामना करना पड़ा है।

यह हैं शुष्क क्षेत्रों की मुख्य समस्याएं

विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुडा ने बताया कि शुष्क क्षेत्रों में किसानों को मुख्यतः वर्षा की कमी, वर्षा के समुचित वितरण का अभाव, मानसून की जल्दी वापसी व लंबे समय तक वर्षा का न होना आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन क्षेत्रों में औसत 300-500 मि.मी. वर्षा प्रतिवर्ष होती है परंतु उपर्युक्त असामान्य परिस्थितियों के कारण यह फसलों की जरूरत को पूरा करने में असमर्थ हो जाती है तथा किसान को फसल का भरपूर लाभ नहीं मिल पाता। इसलिए इन्हीं परिस्थितयों को ध्यान में रखकर ही किसानों के लिए सामयिक प्रबंधन अति आवश्यक है।

ऐसे करें सामयिक प्रबंधन

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग के कृषि वैज्ञानिक डॉ. सुरेंद्र कुमार शर्मा ने बताया कि सामयिक प्रबंधन के लिए किसान कुछ विशेष ध्यान रखकर अपनी फसल की पैदावार बढ़ा सकते हैं। उन्होंने सामयिक प्रंबधन के लिए निम्नलिखित कारण बताए हैं जो इस प्रकार हैं :-

मानसून का देर से आना = इस दौरान बाजरे की एचएचबी 67 संशोधित प्रजाति की किस्म का प्रयोग कर सकते हैं क्योंकि यह कम अवधि की किस्म होने के कारण पछेती बोने पर भी अच्छी पैदावार देती है। बाजरे की बिजाई जुलाई के अन्तिम सप्ताह तक कर सकते हैं। बाजरे की तीन सप्ताह पुरानी नर्सरी के पौधों को जुलाई के अंत से अगस्त के दूसरे सप्ताह तक रोपाई कर सकते हैं। इसके अलावा मूंग, लोबिया एवं ग्वार की अगस्त के प्रथम सप्ताह तक बिजाई कर सकते हैं।

बिजाई के समय लगातार वर्षा का होना = अगर बिजाई के समय लगातार बारिश हो तो सूखे खेतों में रीजर-सीडर द्वारा डोली व नाली विधि से बिजाई करनी चाहिए। मानसून की वर्षा होने से पहले बाजरे की पौध तैयार रखनी चाहिए ताकि वर्षा के तुरंत बाद बाजरे की पौध की रोपाई की जा सके। अगर मानसून की जल्द वापसी हो तो बाजरे की प्रत्येक तीसरी लाइन को काटकर चारे में प्रयोग कर सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	18.07.2020	--	--

दुधारू पशुओं के लिए लाभकारी है लोबिया : प्रो. समर सिंह

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 18 जुलाई : दुधारू पशुओं के लिए गर्मियों के मौसम में लोबिया की चारे की फसल लाभकारी है। यह गर्मी और खरीफ मौसम की जल्द बढ़ने वाली फलीदार, पौष्टिक एवं स्वादिष्ट चारे वाली फसल है। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय प्रोफेसर समर सिंह ने किसानों को लोबिया फसल की बिजाई संबंधी सलाह देते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि लोबिया की खेती प्राय: सिंचित क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। हरे चारे के अलावा दलहन, हरी फली (सब्जी) व हरी खाद के रूप में अकेले अथवा मिश्रित फसल के तौर पर भी लोबिया को उगाया जाता है। उन्होंने कहा कि अगर किसान लोबिया को ज्वार, बाजरा तथा मक्की के साथ उगाएं तो इन फसलों के चारे की गुणवता भी बढ़ जाती है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि गर्मियों में दुधारू पशुओं की दूध देने की क्षमता बढ़ाने के लिए लोबिया का चारा अवश्य खिलाना चाहिए। इसके चारे में औसतन 15-20 प्रतिशत प्रोटीन और सूखे दानों में लगभग 20-25 प्रतिशत प्रोटीन होती है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी व पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. डी.एस. फोगाट व ज्वार विशेषज्ञ डॉ. सतपाल ने बताया कि किसान लोबिया की उन्नत किस्में लगाकर चारा उत्पादन बढ़ा सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समरघोष सिरसा	18.07.2020	--	--

सामयिक प्रबंधन से शुष्क क्षेत्र में भी किसान ले सकते हैं उचित उत्पादनः प्रो. समर सिंह

हिसार। प्रदेश में सिंचाई के साधनों के बढ़ने के बावजूद कुल खेती योग्य भूमि का लगभग 20 प्रतिशत भाग शुष्क खेती के अंतर्गत आता है, जो कि मुख्यतः वर्षा पर आधारित है। इसलिए विषम परिस्थितियों में शुष्क क्षेत्रों के लिए खरीफ फसल की पैदावार बढ़ाने के लिए सामयिक प्रबंधन अति आवश्यक है। इसे अपनाकर किसान निश्चित रूप से अपनी फसल की पैदावार बढ़ा सकते हैं। उक्त सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफसर समर सिंह ने किसानों को दी। उन्होंने कहा कि बाजरा खरीफ मौसम की प्रमुख फसल होने के साथ ही शुष्क क्षेत्रों में इसके उत्पादन का भी महत्वपूर्ण योगदान है। प्रदेश में कुल वर्षा अधिकतर दो महीनों के अन्दर ही मध्य जुलाई से मध्य सितंबर तक हो जाती है। यदि हम पिछले 10 वर्षों के अंतर्गत वर्षा की मात्रा, मानसून के आगमन व वापसी को देखें तो कई बार तो बारिश सामान्य से भी कम हुई है और कई बार सूखे की स्थिति का भी सामना करना पड़ा है। विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा ने बताया कि शुष्क क्षेत्रों में किसानों को मुख्यतः वर्षा की कमी, वर्षा के समुचित वितरण का अभाव, मानसून की जल्दी वापसी व लंबे समय तक वर्षा का न होना आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

इन क्षेत्रों में औसत 300-500 मि.मी. वर्षा प्रतिवर्ष होती है परंतु उपर्युक्त असामान्य परिस्थितियों के कारण यह फसलों की ज़रूरत को पूरा करने में असमर्थ हो जाती है तथा किसान को फसल का भरपूर लाभ नहीं मिल पाता। इसलिए इन्हीं परिस्थितयों को ध्यान में रखकर ही किसानों के लिए सामयिक प्रबंधन अति आवश्यक है।

कृषि विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग के कृषि वैज्ञानिक डॉ. सुरेंद्र कुमार शर्मा ने बताया कि सामयिक प्रबंधन के लिए किसान कुछ विशेष ध्यान रखकर अपनी फसल की पैदावार बढ़ा सकते हैं। उन्होंने कहा कि बाजरे की बिजाई जुलाई के अन्तिम सप्ताह तक की जा सकती है।

बाजरे की तीन सप्ताह पुरानी नर्सरी के पौधों को जुलाई के अंत से अगस्त के दूसरे सप्ताह तक रोपाई कर सकते हैं। इसके अलावा मूंग, लोबिया एवं ग्वार की अगस्त के प्रथम सप्ताह तक बिजाई कर सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समरघोष सिरसा	18.07.2020	--	--

हकृवि कुलपति व कृषि मंत्री की कृषि मुद्दों को लेकर हुई मंत्रणा

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व कृषि मंत्री जे.पी. दलाल की बीते शनिवार को कृषि संबंधी विभिन्न मुद्दों को लेकर मंत्रणा हुई। कुलपति व कृषि मंत्री की यह मंत्रणा महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय उचानी (करनाल) में हुई। इस दौरान कुलपति ने कृषि मंत्री जे.पी. दलाल को विश्वविद्यालय में कोविड-19 के मद्देनजर राज्य व केंद्र सरकार के सभी दिशा-निर्देशों को ध्यान में रखते हुए चल रही गतिविधियों से अवगत कराया। कुलपति ने कृषि मंत्री को बताया कि विश्वविद्यालय में कोविड-19 के चलते विभिन्न विभागों द्वारा ऑनलाइन वेबिनार आयोजित/सेमीनार/प्रशिक्षण कार्यक्रम जारी हैं। उन्होंने बताया कि स्नातकोत्तर विद्यार्थियों की थीसिस सेमीनार, मूल्यांकन और वाइवा का कार्य भी सफलतापूर्वक चल रहा है।

इसके अलावा विश्वविद्यालय में कोविड-19 की हिदायतों के अनुसार चल रही गतिविधियों को लेकर भी चर्चा की। कुलपति ने कृषि मंत्री जे.पी. दलाल के साथ प्रदेश के टिड्डी प्रभावित क्षेत्रों को लेकर चर्चा की व बताया कि विश्वविद्यालय का कीट विज्ञान विभाग इस बारे में किसानों को समय-समय पर जागरूक कर रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल न्यूज	18.07.2020	--	--

शुष्क क्षेत्रों में खरीफ फसल बढ़ाने के प्रबंध करने जरूरी : प्रो. समर सिंह

पल पल न्यूज: हिसार, 18 जुलाई। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफसर समर सिंह ने कहा कि प्रदेश में सिंचाई साधनों के बढ़ने के बावजूद कुल खेती योग्य भूमि का लगभग 20 प्रतिशत भाग शुष्क खेती के अंतर्गत आता है, जोकि मुख्यतः वर्षा पर आधारित है। इसलिए विषम परिस्थितियों में शुष्क क्षेत्रों के लिए खरीफ फसल की पैदावार बढ़ाने के लिए सामयिक प्रबंधन अति आवश्यक है। इसे अपनाकर किसान निश्चित रूप से अपनी फसल की पैदावार बढ़ा सकते हैं। उन्होंने कहा कि बाजरा खरीफ मौसम की प्रमुख फसल होने के साथ ही शुष्क क्षेत्रों में इसके उत्पादन का भी महत्वपूर्ण योगदान है। प्रदेश में कुल वर्षा अधिकतर दो महीनों के अन्दर ही मध्य जुलाई से मध्य सितम्बर तक हो जाती है। यदि हम पिछले 10 वर्षों के अंतर्गत वर्षा की मात्रा, मानसून के आगमन व वापसी को देखें तो कई बार तो बारिश सामान्य से भी कम हुई है और कई बार सूखे की स्थिति का भी सामना करना पड़ा है। उन्होंने बताया कि शुष्क क्षेत्रों में किसानों को मुख्यतः वर्षा की कमी, वर्षा के समुचित वितरण का अभाव, मानसून की जल्दी वापसी व लंबे समय तक वर्षा का न होना आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन क्षेत्रों में औसत 300-500 मि.मी. वर्षा प्रतिवर्ष होती है परंतु उपर्युक्त असामान्य परिस्थितियों के कारण यह फसलों की जरूरत को पूरा करने में असमर्थ हो जाती है तथा किसान को फसल का भरपूर लाभ नहीं मिल पाता। इसलिए इन परिस्थितयों को ध्यान में रखते हुए किसानों के लिए सामयिक प्रबंधन अति आवश्यक है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग के कृषि वैज्ञानिक डॉ. सुरेंद्र कुमार शर्मा ने बताया कि सामयिक प्रबंधन के लिए किसान कुछ विशेष ध्यान रखकर अपनी फसल की पैदावार बढ़ा सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान इस दौरान बाजरे की एचएचबी 67 संशोधित किस्म का प्रयोग कर सकते हैं क्योंकि यह कम अवधि की किस्म होने के कारण पछेती बोने पर भी अच्छी पैदावार देती है। बाजरे की बिजाई जुलाई के अन्तिम सप्ताह तक कर सकते हैं। बाजरे की तीन सप्ताह पुरानी नर्सरी के पौधों की जुलाई के अंत से अगस्त के दूसरे सप्ताह तक रोपाई कर सकते हैं। इसके अलावा मूंग, लोबिया एवं ग्वार की अगस्त के प्रथम सप्ताह तक बिजाई कर सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार पत्र	18.07.2020	--	--

विषम परिस्थितियों में शुष्क क्षेत्रों हेतु खरीफ की पैदावार बढ़ाने सामयिक प्रबंधन ज़रूरी : समर सिंह

कुल खेती योग्य भूमि का 20 प्रतिशत भाग शुष्क खेती के अंतर्गत आता है

चंडीगढ़, 18 जुलाई (विशेष संवाददाता): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि प्रदेश में सिंचाई साधनों के बढ़ने के बावजूद कुल खेती योग्य भूमि का लगभग 20 प्रतिशत भाग शुष्क खेती के अंतर्गत आता है, जोकि मुख्यत: वर्षा पर आधारित है। इसलिए विषम परिस्थितियों में शुष्क क्षेत्रों के लिए खरीफ फसल की पैदावार बढ़ाने के लिए सामयिक प्रबंधन अति आवश्यक है। इसे अपनाकर किसान निश्चित रूप से अपनी फसल की पैदावार बढ़ा सकते हैं। उन्होंने कहा कि बाजरा खरीफ मौसम की प्रमुख फसल होने के साथ ही शुष्क क्षेत्रों में इसके उत्पादन का भी महत्वपूर्ण योगदान है। प्रदेश में कुल वर्षा अधिकतर दो महीनों के अन्दर ही मध्य जुलाई से मध्य सितम्बर तक हो जाती है। यदि हम पिछले 10 वर्षों के अंतर्गत वर्षा की मात्रा, मानसून के आगमन व वापसी को देखें तो कई बार तो बारिश सामान्य से भी कम हुई है और कई बार सूखे की स्थिति का भी सामना करना पड़ा है।

बाजरा खरीफ मौसम की प्रमुख फसल होने के साथ ही शुष्क क्षेत्रों में इसके उत्पादन है महत्वपूर्ण योगदान

उन्होंने बताया कि शुष्क क्षेत्रों में किसानों को मुख्यत: वर्षा की कमी, वर्षा के समुचित वितरण का अभाव, मानसून की जल्दी वापसी व लंबे समय तक वर्षा का न होना आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन क्षेत्रों में औसत 300-500 मिमी वर्षा प्रतिवर्ष होती है परंतु उपर्युक्त असामान्य परिस्थितियों के कारण यह फसलों की जरूरत को पूरा करने में असमर्थ हो जाती है तथा किसान को फसल का भरपूर लाभ नहीं मिल पाता। इसलिए इन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए किसानों के लिए सामयिक प्रबंधन अति आवश्यक है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग के कृषि वैज्ञानिक डॉ. सुरेंद्र कुमार शर्मा ने बताया कि सामयिक प्रबंधन के लिए किसान कुछ विशेष ध्यान रखकर अपनी फसल की पैदावार बढ़ा सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान इस दौरान बाजरे की एचएचबी 67 संशोधित किस्म का प्रयोग कर सकते हैं क्योंकि यह कम अवधि की किस्म होने के कारण पछेती बोने पर भी अच्छी पैदावार देती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाईन (जीवन आधार)	**18.07.2020**	--	--

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति ने वर्षा पर निर्भर क्षेत्रों के किसानों से की खरीफ फसलों के लिए सामयिक प्रबंधन की अपील

हिसार,

प्रदेश में सिंचाई के साधनों के बढ़ने के बावजूद कुल खेती योग्य भूमि का लगभग 20 प्रतिशत भाग शुष्क खेती के अंतर्गत आता है, जो कि मुख्यत: वर्षा पर आधारित है। इसलिए विषम परिस्थितियों में शुष्क क्षेत्रों के लिए खरीफ फसल की पैदावार बढ़ाने के लिए सामयिक प्रबंधन अति आवश्यक है। इसे अपनाकर किसान निश्चित रूप से अपनी फसल की पैदावार बढ़ा सकते हैं।

यह बात हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफसर समर सिंह ने किसानों को सलाह देते हुए कही। उन्होंने कि बाजरा खरीफ मौसम की प्रमुख फसल होने के साथ ही शुष्क क्षेत्रों में इसके उत्पादन का भी महत्वपूर्ण योगदान है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाईन (जीवन आधार)	**18.07.2020**	--	--

हिसार,

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व प्रदेश के कृषि मंत्री जेपी दलाल की शनिवार को कृषि संबंधी विभिन्न मुद्दों को लेकर मंत्रणा हुई। कुलपति व कृषि मंत्री की यह मंत्रणा महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय उचानी (करनाल) में हुई। इस दौरान कुल ने कृषि मंत्री जेपी दलाल को विश्वविद्यालय में कोविड-19